प्रदूषण की सारी सीमाएं तोड़ता चीन

डॉ. महेश परिमल

कुछ दिनों पहले अखबार में एक तस्वीर प्रकाशित की गई थी, जिसमें चीनी लोग सूर्योदय-सूर्यास्त देखने के लिए बहुत बड़े स्क्रीन का इस्तेमाल कर रहे हैं। इस पर कुछ लोग सोच सकते हैं कि चीन ने विज्ञान के क्षेत्र में कितनी प्रगति कर ली कि इतना बड़ा स्क्रीन बनाने लगा, जिस पर लोग सूरज के दर्शन कर सकें। इस तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि चीन प्रगति की दौड़ में इतनी तेज़ी से भाग रहा है कि उसे पता ही नहीं है कि उत्पादन के लिए वह जो कारखाने चला रहा है, उन्हें चलाने के लिए इतना अधिक कोयला जलाना पड़ रहा है कि आज वहां की वायु ज़हरीली हो गई है।

ऐसे पर्दों पर देखेंगे चीनवासी सूर्यास्त

इन कारखानों का धुआं इतना अधिक घना हो गया है कि कई शहरों में सूर्य के दर्शन ही नहीं होते। इसीलिए वहां लोगों को सूर्य दर्शन कराने के लिए बड़े स्क्रीन का इस्तेमाल किया जा रहा है। विकास की दौड़ में चीन यह भी भूल गया कि यदि लोगों को सांस लेने के लिए शुद्ध वायु नहीं मिलेगी, तो वे जी कैसे पाएंगे।

चीन के कई शहरों में बड़े-बड़े वैक्यूम क्लीनर लगाए गए है ताकि वायु की गंदगी दूर की जा सके, और लोगों को शुद्ध वायु मिल सके। चीन का सबसे प्रदूषण वाला शहर राजधानी बीजिंग ही है, लेकिन हमारे देश की राजधानी दिल्ली अब बीजिंग के साथ प्रदूषण के मामले पर स्पर्धा कर रही है।

चीन के आर्थिक विकास को देखते हुए यह सोचा जाना आवश्यक है कि इसके लिए उसने क्या खोया। ब्रिटेन के चिकित्सा जर्नल में प्रकाशित एक शोध पत्र के अनुसार केवल वायु प्रदूषण के कारण चीन में एक वर्ष में 12 लाख लोग मारे गए। अन्य देशों में वाहनों एवं कारखानों से निकलने वाली ज़हरीली वायु को नियंत्रित करने के कई कानून हैं। पर चीन ने अपनी आर्थिक प्रगति के लिए पर्यावरण तक को बिगाड़ कर रख दिया है। चीन के अधिकांश उद्योग सरकारी होने की वजह से प्रदूषण रोकने के लिए बनाए गए कानून की धज्जियां उड़ रही हैं। चीन की राजधानी बीजिंग में हवा में प्रदूषित कणों की मात्रा मानक से 20 गुना बढ़ गई है। हवा में सामान्यतः 2.5 पीएम कण (यानी ऐसे कण जिनकी साइज़ 2.5 माइक्रोमीटर से कम हो) प्रति घन मीटर हवा में 25 माइक्रोग्राम तक हों, तो उसे सुरक्षित माना जाता है। बीजिंग में इन कणों का स्तर 500 माइक्रोग्राम तक पहुंच गया है। बीजिंग के नागरिक घर से बाहर निकलते ही अपना चेहरा मास्क से ढंक लेते हैं।

चीन का सबसे प्रदूषित शहर हार्बिन माना जाता है। जहां पीएम 2.5 प्रदूषण 1000 माइक्रोग्राम तक पहुंच गया है। कई बार शंघाई की तुलना हमारे मुंबई से की जाती है। पिछले वर्ष दिसम्बर के महीने में शंघाई में हवा का प्रदूषण इतना अधिक बढ़ गया था कि एक सप्ताह तक हाईवे और स्कूलों को बंद रखना पड़ा था। इस दौरान शंघाई एयरपोर्ट पर अनेक उड़ानें रद्द करनी पड़ी थीं।

प्रदूषण दूर करने के लिए चीनी सरकार तरह-तरह के प्रयोग करती रहती है। इससे कई बार प्रदूषण बढ़ाने में ही

मदद हुई है। इनमें से एक प्रयोग यह था कि कृत्रिम बारिश कर प्रदूषण को दूर कर दिया जाए। दूसरा प्रयोग बड़े-बड़े वैक्यूम क्लीनर चलाकर ज़हरीली हवा सोख लेने का था। इन कारणों से अब चीन में लोग प्रदूषण दूर करने के निजी साधन खरीदने लगे हैं।

वैक्यूम क्लीनर का उपयोग हम घर का कचरा साफ करने में करते हैं, पर चीन सरकार इसका उपयोग हवा में प्रदूषण कम करने के लिए करती है। इस दिशा में उसके शोध लगातार जारी है। वहां हाल ही में एक डच मेकेनिक ने 50 मीटर लंबा और 50 मीटर चौड़ा तांबे की कुंडली वाला एक वैक्यूम क्लीनर का डिज़ाइन तैयार किया है। इसे किसी बगीचे में लगाया जाएगा। यह हवा में फैले ज़हरीले कणों को खींच लेगा। इससे बगीचे की हवा साफ हो जाएगी। यदि यह प्रयोग सफल रहा, तो ऐसे ही क्लीनर कई बगीचों में लगाए जाएंगे। फिर जो भी नागरिक शुद्ध वायु के लिए इन बगीचों में आएगा, उससे शुद्ध वायु के बदले शुल्क लिया जाएगा।

प्रदूषण के कारण कुछ नए-नए करतब भी चीन में हो रहे हैं। यहां के लोग प्रदूषण से इतने अधिक तंग आ चुके हैं कि उद्योगपतियों द्वारा बनाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के प्रदूषण-रोधी यंत्र खरीद रहे हैं। एक व्यक्ति ने ऐसी साइकिल बनाई है, जिसके पैडल घुमाने से आसपास की हवा शुद्ध होती है। कई कंपनियों ने बैटरी से चलने वाले एयर फिल्टर बनाए हैं, जिसे चेहरे पर पहनने से सांस में ली जाने वाली हवा शुद्ध हो जाती है। कई नागरिक शहर के समीप पहाड़ों पर गुफाएं खोदकर रहने का विचार कर रहे हैं।

2008 में जब बीजिंग में ओलम्पिक खेलों का आयोजन हुआ था, तब से प्रदूषण का स्तर बहुत अधिक बढ़ गया है। ओलम्पिक उद्घाटन के अवसर पर आकाश शुद्ध रहे, इसलिए कृत्रिम बारिश की गई थी। अब वहां का मौसम विभाग कह रहा है कि ठंड में आकाश को साफ रखने के लिए स्थायी रूप से कृत्रिम बारिश का सहारा लेना पड़ेगा। इससे आकाश साफ रहेगा।

अभी तक चीनी सरकार का ध्यान कारखानों एवं वाहनों से निकलने वाले धुएं की तरफ नहीं गया लगता है। प्रदूषण के यही सबसे बड़े कारण हैं। इन पर नियंत्रण की सरकार की कोई योजना नहीं है। यदि इस दिशा में कार्रवाई की जाती है, तो कारखानों में कोयले के बदले गैस का इस्तेमाल करना होगा और अधिक प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों का लायसेंस रद्द करना होगा। इसके लिए 280 अरब डॉलर के यंत्र खरीदने होंगे, जो संभव नहीं है।

राजधानी दिल्ली भी बीजिंग की स्पर्धा में उतर रही है। जनवरी के तीन सप्ताह में दिल्ली में 2.5 पीएम कणों का स्तर प्रति घन मीटर 473 माइक्रोग्राम था, जो बीजिंग के प्रदूषण से थोड़ा ही कम है। हमारे देश के लोग और सरकार यदि बढ़ते प्रदूषण की दिशा में जागृत नहीं होते, तो चीन की तरह हमारे देश में दैत्याकार वैक्यूम क्लीनरों की आवश्यकता होगी। आज जिस तेज़ी से जंगल खत्म हो रहे हैं, शुद्ध वायु भी बिकने लगी है, लोग अधिक प्रदूषण के कारण विभिन्न बीमारियों का शिकार हो रहे हैं, उसे देखते हुए देश को सचेत हो जाना चाहिए। देर हो जाने से कुछ भी ठीक नहीं होने वाला। ***(स्रोत फीचर्स)***